BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

# उत्तर प्रदेश : बदलती राजनीति, बदलता नजरिया

**विनय कुमार पाण्डेय**
**राजनीति विज्ञान**
**दिल्ली विश्वविद्यालय**

**सारांश :**

इस लेख के द्वारा हम साधारणतया हम यह देखने की कोशिश करेंगे कि किस प्रकार से उत्तर प्रदेश की राजनीति में मतदाता व्यवहार, वहां की चुनाव प्रक्रिया, राजनीति एवं राजनीतिक दलों को प्रभावित करता है। यह प्रदेश जनसंख्या की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा प्रदेश है । यहां पर लगभग 24-25 करोड़ की जनसंख्या निवास करती है। जो की विविधताओं से भरा हुआ है। इस प्रदेश में हिन्दू की बहुलता है, तथा मुस्लिम दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या के रूप में निवास करती है। इस लेख के माध्यम से हम यह भी देखने का प्रयास करेंगे कि यहां आजादी के पश्चात से लेकर 2017 तक भारतीय जनता पार्टी के शासन में आने तक अन्य दलों जैसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय क्रांति दल, समाज वादी पार्टी, बहुजन समाजवादी पार्टी आदि दलों ने हिन्दू बाहुल्य वाले प्रदेश में अपना शासन किस प्रकार से स्थापित किया ? हिंदुत्व की विचारधारा कहीं जाने वाली भारतीय जनता पार्टी हिंदू बाहुल्य क्षेत्र में अपना शासन स्थापित करने से वंचित क्यों रही ? क्या इस दल की राजनीति हिंदुत्व विचारधारा के इर्द गिर्द घूमती है ? या फिर सबका साथ सबका विकास के मंत्र के साथ सत्ता में आती है ? क्या कारण थे की 2017 में उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की जबरदस्त आंधी में दूसरे राजनीतिक दल उड़ गए और भाजपा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 324 सीटें हासिल की हैं।जिसमें से भाजपा ने अकेले 311 सीटें जीती हैं। उत्तर प्रदेश चुनाव में भाजपा का यह अब तक का सर्वोत्तम प्रदर्शन रहा है। जनता अखिलेश के नारे काम बोलता है को सिरे से खारिज कर दिया। कुल 403 सीटों में से 324 पर भाजपा गठबंधन को प्राप्त हुई । और क्या कारण रहे कि 54 पर सपा-कांग्रेस गठबंधन, 19 पर बसपा और 6 सीटें ही अन्य के खाते में गई हैं। इसके द्वारा हम उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के साथ हम प्रदेश के मतदाता व्यहवार का भी अध्ययन करने का प्रयास करेंगे।

**मुख्य शब्द :** राजनीति , मतदाता, कार्यकाल, शासन

**परिचय :**

उत्तर प्रदेश के अगर भौगोलिक विस्तार की बात करें तो यह भारत के उत्तर दिशा में स्थित है। उत्तर प्रदेश राज्य की राजधानी लखनऊ है। इस राज्य का विस्तार 2,40,928 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में हुआ है। यहाँ का मुख्य उच्च न्यायालय प्रयागराज में स्थित है। यह भारत का सबसे बड़ा जनसंख्या वाला प्रदेश भी है जिस से यह उत्तर प्रदेश भारत की राजनीति का एक अभिन्न और मुख्य प्रदेश बन जाता है। उत्तर प्रदेश में कुल 80 लोकसभा सीटें तथा 403 विधान सभा की सीटों पर चुनाव चुनाव आयोग द्वारा संपन्न कराए जाते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात से यहां प्रदेश की राजनीति पर मुख्यता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय क्रांति दल, बहुजन समाज पार्टी, समाजवादी पार्टी आदि दलों का दबदबा बना हुआ है। प्रदेश में हिन्दू धर्म को 3/4 से अधिक आबादी द्वारा अभ्यास किया जाता है। यहां पर इस्लाम दूसरे सबसे बड़े सम्प्रदाय के रूप में है। उत्तर प्रदेश प्राचीन और मध्यकालीन भारत के शक्तिशाली साम्राज्यों का भी घर रहा है। यह प्रदेश क्षेत्रफल के हिसाब से देश का चौथा सबसे बड़ा भारतीय राज्य है। उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था की बात करें तो यह सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 15.79 लाख करोड़ और लगभग 80 57,480 प्रति व्यक्ति जीडीपी के साथ भारत में दूसरी सबसे बड़ी राज्य अर्थव्यवस्था है। यहां की राजनीति में हमें समय समय पर अस्थिरता भी देखने को मिलती है 1968 के


@2025 Bihar Shodh Samaagam

बाद से उत्तर प्रदेश में लगभग दस बार अलग कारणों से ,जो कीलगभग कुल 1,700 दिनों के लिए राष्ट्रपति शासन भी लगाया गया है।

**1951-67 कांग्रेस का प्रभुत्व काल :**

प्रथम बार उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए चुनाव 26 मार्च, 1952 को आयोजित किये गए थे जिसमें 347 विधानसभाओं के लिए 2,604 उम्मीदवारों ने चुनाव लड़ा। जिसमें 83 दो-सदस्य निर्वाचन क्षेत्र और 264 एकल सदस्य निर्वाचन क्षेत्र थे। और उनमें से 388 सीटों पर जीत दर्ज के साथ कांग्रेस ने पहली बार गोविंद बल्लभ पंत को प्रदेश का मुख्यमंत्री के रूप में नियुक्त किया। प्रदेश की दूसरी विधानसभा के चुनावों के उपरांत सत्ता फिर कांग्रेस के हाथ में आई और इस बार डॉ सम्पूर्नानन्द मुख्यमंत्री बने। लेकिन कमलापति त्रिपाठी और चन्द्र भानु गुप्ता के दांव पेंच के चलते उन्हें 1960 में अपने पद से हटना पड़ा जिसके चलते चन्द्र भानु गुप्ता विधान सभा के बचे कार्यकाल के लिए मुख्यमंत्री बने।तीसरी विधान सभा चुनावों में फिर से कांग्रेस ही जीती और चन्द्रभानु गुप्ता को फिर मुख्यमंत्री बनाया गया, पार्टी में आतंरिक गतिरोध के चलते उन्हें मुख्यमंत्री के पद से हटाकर सुचेता कृपलानी जी को मुख्यमंत्री बनाया गया। इस समय तक प्रदेश की राजनीति की सबसे बड़ी बात ये थी कि तमाम गुटबाजियों के बावजूद भी सत्तासीन दल( कांग्रेस) को किसी बड़ी टूट फूट नहीं झेलनी पड़ी और तीनों विधानसभाओं में कार्यकाल पूर्ण किया।

**1967 पहली गैर कांग्रेसी सरकार :**

प्रदेश में लम्बे समय से चरण सिंह कांग्रेस में अपनी स्थिति को लेकर काफी असंतुष्ट थे और पार्टी केअंदर ऊंची जाति वाले नेतृत्व को लेकर असमंज में थे। चन्द्र भानु गुप्ता से कभी अन्य पिछड़ा वर्ग उम्मीदवारों को पुलिस भर्ती में उम्र में छूट मिली तो कभी किसानों से लिए जाने वाले कर में 50 फीसदी बढ़ोत्तरी जैसे मुद्दों पर चरण सिंह की अनबन रही थी। यह वह समय था जब हरित क्रांति के चलते पिछड़ी व खेतिहर जातियां आर्थिक रूप से थोड़ा बेहतर हो रहीं थीं ,और राम मनोहर लोहिया जी का **पिछड़ा पावे सौ में साठ** का नारा उनकी राजनैतिक आकांक्षाओं को साकार रूप दे रहा था। ऐसे समय में अंत में चरण सिंह ने कांग्रेस को छोड़कर पिछड़ों और किसानों की राजनैतिक ताकत के दम पर प्रदेश की सत्ता हासिल करने का मन बना लिया।प्रदेश में 1967 में हुए चौथे

विधानसभा के चुनावों में कांग्रेस बहुत मेहनत के बाद बहुमत तक पहुंच पायी, लेकिन चन्द्र भानु गुप्ता को मुख्यमंत्री बनाने के पार्टी के फैसले पर चरण सिंह ने कुछ अन्य मुद्दों का बहाना बनाकर पार्टी छोड़ दिया।

1969 को हुए 5वीं विधानसभा के चुनावों में कांग्रेस को 425 सीटों में से 211 सीटों पर सफलता मिली, जनसंघ दल को 49, कम्युनिस्ट दलों को कुल 5, संयुक्तसोशलिस्ट पार्टी को 33 और चरण सिंह की अपनी भारतीय क्रांति दल को 98 सीटें मिलीं। जोड़-तोड़ करके कांग्रेस के चन्द्र भानु गुप्ता एक बार फिर से प्रदेश के मुख्यमंत्री बने पर उनकी सरकार एक साल से ज्यादा दिनों तक नही सम्भल सकी। अस्थिरता का जो दौर पिछली विधानसभा से प्रारंभ हुआ था वो इसमें भी चलता रहा, लेकिन मुख्यमंत्रियों की संख्या के मामले में इस विधानसभा ने लगभग रिकॉर्ड ही बना दिया। इस एक विधानसभा के कार्यकाल के दौरान प्रदेश में 5 मुख्यमंत्री बने और दो बार राष्ट्रपति शासन देखने को मिला ।

**जनता दल का आगमन :**

इंदिरा गांधी के द्वारा लगाया गए आपात काल के कारण समूचा विपक्ष लगभग एकजुट हुआ और जनता पार्टी के रूप में सभी विपक्षी पार्टियां एकजुट होकर 1977 के विधान चुनाव में आई। इंदिरा गांधी का निरंकुशवाद और आपातकाल की ज्यादतियों के विरुद्ध उमड़े जन विक्षोभ में केंद्र और राज्य दोनों जगह से कांग्रेस का लगभग सफाया हो गया और प्रदेश में 7वीं विधानसभा में पहली बार जनता पार्टी की सरकार प्रदेश में सत्तासीन हुई।

**मंडल मंदिर की राजनीति 1989 :**

प्रदेश में 10, 11 और 12वीं विधानसभाओं के चुनावों में एक बार फिर अस्थिरता के राजनीति की वापसी हुई, और कोई भी दल अपना पूर्ण कार्यकाल पूरा नहीं कर पाया। इसके साथ ही देखें तो जहां एक ओर भाजपा ने अपने घोषणापत्र के माध्यम से अयोध्या में बाबरी मस्जिद की जगह राम मंदिर के निर्माण को मुद्दा बनाकर राजनीति की शुरुआत की, वहीं पर दूसरी ओर समाजवादी पार्टियों ने पिछड़ों को सरकारी नौकरियों और शिक्षा में 27% आरक्षण दिलाने जैसे मुद्दे लाकर सामाजिक न्याय की राजनीति को एक स्वरूप प्रदान किया। इसी समय में प्रदेश के राजनीति में पिछड़े और दलित वर्गों की राजनैतिक ताकतों के प्रतिनिधि के रूप में नए राजनैतिक पार्टियों का न सिर्फ उभार हुआ, बल्कि सत्ता पर उनकी पकड़ इतनी ज्यादा मजबूत हुई कि आने वाले दस वर्षों तक कोई सवर्ण, प्रदेश की मुख्यमंत्री की सत्ता पर नहीं बैठ सका। प्रदेश में सरकार बनाने वाले लगभग सभी दलों ने पिछड़ों और दलित वर्ग के उम्मीदवारों को ही अपना मुख्यमंत्री बनाया। और बाद के समय में भी प्रदेश की राजनीति लगभग इसी दौर की दो राजनीतिक शख्सियतों बहन मायावती और मुलायम सिंह के इर्द गिर्द ही घूमती रही।

**1997 का दौर : शर्मसार राजनीति**

उतर प्रदेश की राजनीति यूं तो कभी आदर्श नहीं रही लेकिन प्रदेश की तेरहवीं विधानसभा को राजनीतिक कदाचारों का सबसे कुख्यात उदाहरण कहा जा सकता है। प्रदेश में अस्थिरता के चलते राजनीतिक पार्टियों ने अपनी सरकार बनाने के लिए लगभग हर संभव हथकंडा प्रयोग किया। जिसमें मुख्यतया विधायकों की खरीदने और बेचने और शक्ति प्रयोग जैसे हथकंडे भी शामिल थे। वर्ष 1997 की देखें तो उस परिस्थिति में अपनी सरकार बचाने के लिए कल्याण सिंह जी ने न मंत्रियों को सिर्फ मंत्री पद का लालच देकर अपने विरोधी दलों से विधायकों को तोड़ने और जोड़ने का प्रयत्न किया बल्कि इसी विधानसभा के समय सदन में शक्ति प्रदर्शन को विधायकों ने पहली बार शाब्दिक अर्थ में लिया और सदन में खूब एक-दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप भी किया।

एक घटना तब सामने आया जब वर्ष 1998 में जब 21 फरवरी को कल्याण सिंह की ही एक सहयोगी पार्टी लोकतान्त्रिक कांग्रेस के सदस्य जगदम्बिका पाल ने राज्यपाल से बहुमत पेश करने का दावा किया कि उनके पास सदन के बहुमत का समर्थन है। जिसकी वजह से राज्यपाल रोमेश भंडारी ने भी प्रक्रियाओं को दरकिनार करते हुए बिना कल्याण जी से बात किए उनकी सरकार

को बर्खास्त कर दिया। और जगदंबिका जी को मुख्यमंत्री पद की शपथ भी दिला दिया। जिसके चलते कल्याण सिंह उसी दिन उच्च न्यायालय से स्टे पत्र ले आये और जिसकी वजह से अगले दिन मुख्यमंत्री सचिवालय में एक और अद्भुत नजारा देखने को मिलता है, जब मुख्यमंत्री कल्याण सिंह अपने मुख्यमंत्री ऑफिस पहुंचे तो वहां जगदम्बिका पाल उनकी कुर्सी पर एक मुख्यमंत्री के रूप में पहले से विराजमान थे। लेकिन जब कल्याण सिंह ने पाल को माननीय उच्च न्यायालय का आदेश दिखाया तो पाल जी कुर्सी छोड़ के चले गए।

और इसी विधानसभा के दौरान उत्तर प्रदेश में अभी तक का इतिहास का सबसे बड़ा मंत्रिमंडल भी देखने को मिलता है। वर्ष 1997 में गठबंधन और जोड़ तोड़कर कर बनी अपनी सरकार को बचाए रखने के लिए कल्याण सिंह ने सबसे बड़ा मंत्रिमंडल बनाया जिसमें 93 मंत्री थे। कुल मिलाकर राजनीति का जो पैंतरा 13वीं विधानसभा के दौरान देखने को मिला वह **न भूतो न भविष्यति** जैसा ही था।

**त्रि शंकु विधानसभा : ( भाजपा, सपा, बसपा) 2002**

प्रदेश में 2002 में हुए चुनावों के बाद की गठित 14वीं विधानसभा का प्रारम्भ ही राष्ट्रपति शासन के साथ होती है, क्योंकि कोई भी दल सदन में अपना बहुमत नहीं सिद्ध कर पाया। लेकिन सबसे बड़ी बात यह रही कि उम्मीद से हटके इस विधानसभा ने केवल दो महीने का ही राष्ट्रपति शासन देखा। जो पिछले विधानसभाओं के हिसाब से देखें तो सबसे कम था। मई 2002 में भाजपा दल के समर्थन से बसपा सुप्रीमो मायावती मुख्यमंत्री बनीं। 1 साल04महीने के बाद ताज कॉरिडोर मामले पर दोनों के बीच तनाव हो गया ,जिसके बाद मायावती जी ने सदन को भंग करने की चिट्ठी राज्यपाल महोदय को सौंप दी।और मौके का फायदा उठाकर मुलायम सिंह ने जोड़,तोड़ करके सदन में अपना बहुमत सिद्ध कर दिया। जिसमें मायावती से बदले की भावना से भाजपा ने भी सपा की अपरोक्ष रूप से मदद की और जिस तरह मुलायम सिंह जी ने बसपा को हटाकर अपना बहुमत सिद्ध उसने एकबारगी 1997 के राजनीति की याद दिला दिया।

**बसपा का आगमन :**

इसमें कोई संदेह नहीं की बसपा सुप्रीमो ने सिर्फ अपने बल पर उत्तर प्रदेश में बहुमत प्राप्त कर एक सराहनीय कार्य किया है। यह वास्तव में बसपा सुप्रीमो मायावती के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है क्योंकि बसपा में उनके अतिरिक्त कोई ऐसा बड़ा नेता नहीं है जो राष्ट्रीय स्तर पर अपनी जान पहचान बना पाया हो । जबकि और दूसरे दलों की बात करे तो उनमें एक से अधिक ऐसे नेता हैं जो की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नाम कमाए हुए हैं। वैसे तो पूर्ववर्ती सरकार ने अपने कार्यों से बसपा के जीत की कहानी लिख दी थी फिर भी इसके लिए बसपा सुप्रीमो को पूरा श्रेय दिया जाना चाहिए।दलित लोगों का यह मुख्य उद्देश्य था की एक दलित नेता इस देश पर पुराने राजा,महाराजों की तरह राज करे, न की आम जनता का सेवा करे, ताकि उन पर किये हुए राज और अत्याचार का बदला लिया जा सके और इसलिए दलित लोगों ने एकजुट होकर मतदान में भाग लिया और बसपा को मतदान किया । सर्वेक्षण के मुताबिक़ उत्तर प्रदेश में इस साल 2007 में 45% लोगों ने वोट किया जिनमें से 45-55% संख्या दलितों लोगों की थी जिनका इस बात से कोई सरोकार नहीं था की उत्तर प्रदेश में गुणवत्ता-पूर्वक सेवा करने वाली सरकार बने। बल्कि उनका सिर्फ एक ही मकसद था की एक दलित की सरकार इस बार राज्य पर राज करे। वोट डालने वाले 45-55% दलित लोगों में से 32% लोगों ने बसपा को मतदान किया। इस साल लगभग 55% ऐसे लोगों ने मतदान नहीं किया जो हमेशा ही एक अच्छे सरकार की कामना रखते हैं, लेकिन वोट डालने नहीं जाते हैं। इसके अलावा पूर्ववर्ती सरकार की करनी की वजह से कुछ सुविधायुक्त (अगड़ी जाति) और वंचित (पिछड़ी जाति) लोगों ने भी बसपा को मतदान किया।

चुनाव से कुछ दिन पहले नए नारे जैसे, **हाथी नहीं गणेश है, ब्रह्मा विष्णु महेश है** या **तिलक तराजू और तलवार, इनको पूजो बारमबार** का जप करने से बहुत सारे सुविधायुक्त लोगों (अगड़ों) का दिल नहीं जीता जा सका। इसके अलावा भूतपूर्व में बसपा सुप्रीमो द्वारा किये गए कामकाज की शैली से बहुत सारे लोग भलीभांति परिचित हैं।

इस चुनाव के परिणाम बताते हैं की 402 विधान सभा सीटों में से 271 सीट ऐसे थे जहाँ प्रत्याशियों ने दस हज़ार वोट के कम अंतर से जीत हासिल की है। केवल 131 सीट ऐसे थे जहाँ प्रत्याशियों ने दस हज़ार वोट के ज्यादा अन्तर से जीत हासिल की। इस प्रकार से दो-तिहाई सीटों पर प्रत्याशियों ने कुल पड़े हुए वोट के 1.5% या इससे कम के अंतर से जीत हासिल किया।

**समाजवादी पार्टी की राजनीति 2012 :**

प्रदेश विधानसभा चुनावों 2012 में समाजवादी पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिल गया । जहां पर समाजवादी पार्टी को 224 सीटों पर जीत हासिल हुई है ,जबकि बहुमत के लिए उसे 202 सीटों की जरूरत थी।

बहुजन समाज पार्टी ने 79 सीटें जीती हैं, जबकि 47 सीटों पर भारतीय जनता पार्टी ने इस चुनाव में सफलता हासिल की है। कांग्रेस और राष्ट्रीय लोकदल को कुल मिलाकर कुल 38 सीटें मिली ।उत्तर प्रदेश में विधानसभा की कुल 403 सीटें हैं। भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरी बहन मायवती की सत्ता कमजोर होकर गिर चुकी थी । मत फीसदी की बात करें तो इस चुनावों में सपा को लगभग 29.13 फीसदी और बसपा को लगभग 25.91 फीसदी मत मिले थे।दरअसल अगर हम देखे तो सपा और बसपा को 2007 में मिले वोट प्रतिशत इन चुनावों में मिले मत प्रतिशत से पूरी तरह से उलट गए थे ।लेकिन जो सबसे अधिक चौकाने वाली बात थी वो यह थी कि इन चुनावों में कुल 59.5 फीसदी मत पड़े थे ,जो की विधानसभा चुनावों के दृष्टिकोण से सर्वाधिक मत थे।

**भारतीय जनता पार्टी का सत्ता आगमन :**

प्रदेश की 17वीं विधानसभा के लिए आम चुनाव सात चरणों में 11 फरवरी से 8 मार्च 2017 तक आयोजित किए गए। इन चुनावों में देखे तो मतदान प्रतिशत भी लगभग 61% के करीब रहा। भाजपा ने 312 सीटें जीतकर ¾ बहुमत प्राप्त किया जबकि सत्तारूढ़ सपा गठबन्धन को सिर्फ 54 सीटें और मायावती को की पार्टी बसपा को 19 सीटें ही प्राप्त हुई। यह वह दौर था जब पूरे देश में प्रधानमंत्री के सुशासन की लहर चल रहा थी।,और देश उनके प्रतिनिधित्व में विकास के राह पर अग्रसर है।

उत्तर प्रदेश के 2017 के विधान सभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 39.67% वोट प्राप्त करते हुए 312 सीटों पर जीत दर्ज की । इसी प्रकार समाजवादी पार्टी ने 2012 के चुनाव में 29.15% वोट के साथ 224 सीटों पर विजय प्राप्त की थी। भारतीय जनता पार्टी ।सबका विकास,सबका साथ भावना के साथ काम कर रही है ,और अधिकार समुदायों को अपने साथ जोंडने का प्रयास करती रही है। विकास , सुशासन, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली ,पानी आदि मुद्दों को प्रदेश में प्रभावी तरीके से सुचारू रूप से लागू करने का प्रयास भी हो रहा है। राम मंदिर, तीन तलाक और राम मंदिर, तीन तलाक और एंटी रोमियो दल बीजेपी के आदि वादों को प्रभावी ढंग से लागू किया गया। 2017 में भाजपा के जीत के प्रमुख कारणों को निम्न आधार पर समझा जा सकता है।

1. **दलित रणनीति :**

इसके माध्यम से 24 अप्रैल 2016 को धम्म चेतना यात्रा वाराणसी से शुरू की गई। और समापन चौदह अक्टूबर को कानपुर में हुआ। जिसमे 453 सभाएं एवम् 593 स्वागत कार्यक्रम हुए । बहन कुमारी मायावती के वोट बैंक में कमी लगाने के लिए बौद्ध भिक्षियो का जत्था बौद्ध विहारों में गया।

2. **तीन बड़ी योजनाएं :**

नोटबंदी मोदी सरकार का की एक बहुत बड़ी परीक्षा थी। **तो** उज्जवला योजना के माध्यम से 52 लाख गैस कनेक्शन, स्वच्छता योजना के तहत शौचालयों का निर्माण का निर्माण कराया गया।जिसका सकारात्मक प्रभाव हमे प्रदेश के चुनाव के परिणामों में देखने को मिला।

**3. घोषणापत्र :**

**4. भाजपा** ने मन की बात कार्यक्रम के तहत अपने प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी के द्वारा लोगो से समस्यायों पर आधारित प्रश्न पूछकर उसके आधार पर अपना घोषणापत्र तैयार किया।जिस से वह आम लोगो से अधिक निकट से जुड़ा हुआ प्रतीत हुआ।

**5. पी एम रैलियां :**

पार्टी ने अपना प्रचार अभियान मोदी ब्रांड के इर्द-गिर्द गढ़ा और मोदी जी ने 23 रैलियां कीं। पार्टी के मुख्य रणनीतिकार अमित शाह जी लगातार मोदी जी के संपर्क में रहे और नेताओं के द्वारा जनसभाओं में मिल रही प्रतिक्रियाओं और परिणामों से उन्हें समय समय पर अवगत कराते रहे।

**6. प्रधानमंत्री का व्यक्तित्व** :

जिस प्रकार अपने एजेंडों और मुद्दों पर ब्रांड मोदी बीजेपी के एक समर्थक ने नतीजों के दिन यानी 11 मार्च को सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर एक ट्वीट किया था, जो यह बताता है कि पार्टी आखिर यूपी की लहर और मोदी जी के बारे में क्या सोचती है। ट्वीट था कि मोदी जी बीजेपी से बड़े हैं, मोदी राम मंदिर से भी बड़े हैं,मोदी आधुनिक भारत के नए रामजी हैं। जो की मोदी के व्यक्तित्व को दर्शाता है। और इस बार ब्रांड मोदी को एक नए तरीके से प्रस्तुत किया गया जिसने सबका साथ सबका विकास और सुशासन के वादे से मजहब के कार्ड को बड़ी मात दे दी है।

**7. दूरदृष्टी दृष्टिकोण :**

उत्तर प्रदेश की में भाजपा की यह जीत सिर्फ चुनाव के समय में बने माहौल मात्र का ही परिणाम नहीं था, बल्कि केंद्र की सत्ता में 2.5 वर्ष के सुशासन के बाद मोदी जी की बढ़ रही लोकप्रियता और अमित शाह जी की सांगठनिक कुशलता का बेमिसाल सम्मिश्रण है। भाजपा की यह जीत दो साल की योजनाबद्ध रणनीति, सांगठनिक मशीनरी मजबूती और आखिर में एक प्रचार प्रसार का मिलाजुला परिणाम है। अमित शाह के अनुसार, '' भाजपा की यह जीत राजनीति से जातिवाद, तुष्टीकरण और परिवारवाद के खात्मे की एक युग का प्रारम्भ है। जहां पर नागरिकों ने विकास की राजनीति को स्वीकार्य किया है।

**8. सबका साथ, सबका विकास** :

इस नारे के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी ने यह संदेश देने की कोशिश की कि सपा और बसपा का चुनावी खेल मुख्यतया जातिवाद ,यादववाद, मुस्लिमवाद,आदि तक ही सीमित रहता है। जबकि भाजपा अन्य का वर्गों का भी सामान रूप से ध्यान रख रही है। मौर्या, कुर्मी के रूप में ज्यादा बड़ी जातियों को जहां टिकटों के बंटवारे में ढील दी गई वहीं विश्वकर्म, गौड़, बेलदार, बघेल और अहिरवार जैसी छोटी जातियों को भी चुनाव में उनका हिस्सा मिला। इस रणनीति के माध्यम से उत्तर प्रदेश विधानसभा में यादवों को लभभग हाशिये पर धकेल देने में जबरदस्त भूमिका अदा की।

चुनाव-पूर्व की गई भविष्यवाणी भी उसी के साथ खत्म हो गई जिसमें दलों द्वारा यह कहा गया था कि भारत वर्ष के सबसे बड़े राज्य में लोग इस बार अपनी जाति और बिरादरी को देखकर ही वोट करेंगे क्योंकि उनका मानना था, केंद्र और राज्य के चुनावों में नागरिकों का व्यवहार अलग अलग होता है।

**9. सोशल मीडिया :**

प्रदेश के कार्यकर्ताओं में से ही प्रदेश क्षेत्र और विधान सभा स्तर पर आईटी, सोशल मीडिया की टीम खड़ी की गई । सभी स्तरों को मिलाकर 5,561 कार्यकर्ता इसी काम में चौबीस घंटे के लिए लगाए गए और 10,344 वॉट्सएप ग्रुप बनाए गए ।

**10. विकास और सुशासन पर बल :**

उत्तर प्रदेश की यह जीत सिर्फ चुनाव में बने वातावरण भर का परिणाम ही नहीं है। बल्कि केंद्र की सत्ता में 2.5 वर्ष के विकास और सुशासन के साथ ही साथ मोदी जी की बढ़ रही लोकप्रियता और अमित जी की सांगठनिक कुशलता का जबरदस्त सम्मिश्रण भी है। जहां जनता ने विकास की राजनीति को स्वीकार्य किया है। और **"न गुंडाराज, न भ्रष्टाचार"** नारे पर विशेष बल दिया गया।इसके अलावा

संगठन में सामाजिक समीकरण ,सदस्यता अभियान ,सम्मेलनों आदि पर विशेष बल दिया गया।

| राजनीतिक दल | 2012 प्राप्त सीटें | प्राप्त मतदान प्रतिशत | 2017 में प्राप्त सीटें | प्राप्त मतदान प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| भारतीय जनता पार्टी | 47 | ** | 312 | 39.67 |
| बहुजन समाज पार्टी | 80 | 25.91 | 19 | 22.21 |
| समाजवादी पार्टी | 224 | 29.15 | 47 | 21.8 |
| भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस | 28 | 11.63 | 7 | 7.63 |
| अन्य | 24 | 18.31 | 18 | 10.31 |

**2012-2017 विधान सभा चुनावों का तुलनात्मक अध्ययन**

**निष्कर्ष :**

इस प्रकार हम देखते हैं कि उत्तर प्रदेश की राजनीति में दलो का काफी उतार चढ़ाव देखने को मिलता है जहां पर राजनीतिक दल एक विशेष विचारधारा से बंधे हुए होते भी सत्ता पर सत्तासीन होते हैं। और वहां स्थिरता एवम् अस्थिरता ( राष्ट्रपति शासन) भी देखने को मिलती है।

उत्तर प्रदेश की राजनीति में जातीय समीकरण आर्थिक विकास संबंधी जागरूकता में परिवर्तित नहीं हो सका है, दूसरी ओर देखें तो, विकास का सीमित लाभ भी कुछ विशेष समुदाय तक ही सिमट कर रह गया।इन परिस्थितियों में, उत्तर प्रदेश में केवल वही पार्टी सफल हो सकती है जो इन जातियों और समुदायों के राजनीतिक और आर्थिक हितों को पूरा कर सके। भाजपा की सबका साथ सबका विकास नीति ने सभी वर्गों एवम् जातियों को संतुष्ट करने का प्रयास किया है। कोरोना काल में इतनी बड़ी जनसंख्या वाले राज्य में योगी प्रशासन ने बड़ी ही सतकर्ता एवं सावधानी पूर्वक प्रदेश की कमान संभाली । भाजपा जिस प्रकार से प्रदेश के विकास आदि मुद्दों पर काम कर रही है, राजनीति शास्त्रियों का मान ना है कि प्रदेश फिर से भाजपा की ओर अग्रसर हो रहा है। अत: उत्तर प्रदेश की दलीय प्रणाली के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तर प्रदेश में न केवल जातीय आधार पर अपितु विकास एवम् मुद्दों के आधार पर भी मतदान किए जाते हैं।जो दल लोगो की समस्यायों को जितना अच्छे से सुलझा सकेगा वहीं अपना शासन स्थापित करने में समर्थ होगा।

**संदर्भ :**


1. Pai,s,(2007). Political process in Uttar Pradesh: Identity, economic reforms and governance. Pearson Longman.
2. Jeffery, R.Jeffrey, C.& Lerche, J. (Eds.). (2014). Development failure and identity politics in Uttar Pradesh. SAGE Publications India.
3. Hasan,Z. (1989). Dominance and mobilisation,Rural politics in western Uttar Pradesh, 1930–1980.Sage Publications.
4. Hasan, Z. (1998). movements and post-Congress politics in Uttar Pradesh. Oxford University Press.
5. Brass,P. R.(1965).Factional politics in an Indian state:The Congress party in Uttar Pradesh. University of California Press.
6. Sharma,Tom &Garg, Executive reform (2018), Kanpur.
7. Mishra, V.& Singh,S.(2021). Aatmanirbharta: Revisiting the idea and practices.Om Publications.
8. Bhat,aaqib,Caste politics in India with special reference to Uttar Pradesh (may, 2019)
9. Noorani, A.G.(2003).The Babri Masjid question, 1528–2003: A matter of national honour.
10. त्रिवेदी, विजय, बीजेपी काल, आज और कल (2019), वेस्टलैंड पब्लिकेशन।